कल्हण : भारत के मानक इतिहासकार

डॉ0 रोताश कुमार[1]
सहायक आचार्य
इतिहास विभाग
गाँधी आदर्श महाविद्यालय, समालखा, पानीपत (हरियाणा)
डॉ0 मुकेश पाल[2]
सहायक आचार्य
इतिहास विभाग
सेठ तारीफ चंद जैन कॉलेज, खट्टा प्रहलादपुर (बागपत)

कल्हण कश्मीर का इतिहासकार था, जिसने राजतरंगिणी की रचना कर पाश्चात्य लेखकों के इस आरोप को खंडित किया कि भारतीयों में ऐतिहासिक अर्न्तदृष्टि नही होती है। कल्हण ने राजतंरगिणी की रचना कश्मीर नरेश जयासिंह (1127–1149 ई0) के राज्यकाल मे की थी। कल्हण के जीवन–वृत के संबंध में पर्याप्त प्रकाश नही पड़ता है। परंतु समकालीन उपलब्ध स्रोतों के आधार पर विद्वानों ने यह लिखा है कि कल्हण एक कश्मीरी ब्राह्मण थे तथा भार्गव कुल की सारस्वत शाखा से सम्बन्ध थे। उनके पिता का नाम चणपक था, जिसे श्री स्टीन (Stein) महोदय ने कश्मीर के राजा हर्ष का मंत्री स्वीकारा है।[1] चणपक 1135 ई0 तक जीवित रहे, परंतु उन्होंने हर्ष के मृत्योपरान्त राज्य कार्य में भाग नही लिया तथा यह भी ज्ञात नहीं होता कि चणपक के पुत्र कल्हण ने लोहर राजवंश के राजाओं के अधीन किसी अधिकारिक पद पर नियुक्त रहे।

कल्हण ने राजतरंगिणी के लेखन का कार्य 1148ई0 में प्रांरभ किया और दो वर्षों के काल में ही इसे पूरा कर लिया। इस ग्रंथ में कश्मीर का इतिहास है, किंतु इसमें किसी एक अथवा विशेष राजवंश का उल्लेख नहीं है, अपितु अनेक राजवंशो का वर्णन हुआ है। राजतरंगिणी ग्रंथ 8 तरंगों (Chapters) में 8 हजार संस्कृत श्लोकों में लिखी गई है। प्रामाणिक संस्करण और अनुवाद आरेल स्टीन (Aurel Stein) द्वारा किया गया है। इस ग्रंथ को तीन भागों में बांटा जा सकता है–

प्रथम भाग में, प्रथम से तृतीय सर्ग के अंतर्गत कल्हण ने समसामयिक परंपराओं के आलोक में अतीत की घटनाओं का उल्लेख किया है।[2]

द्वितीय भाग में, चौथे से छठे सर्ग के अंतर्गत 'कार्कोट' तथा 'उत्पल' राजवंशो का इतिहास है, जिसमें उन्होंने अपने पूर्ववर्ती इतिहासकारों तथा समकालीन इतिहासकारों के स्रोतों से सामग्री का उपयोग किया है।

तृतीय भाग में, सातवें से आठवें सर्ग के अंतर्गत दो 'लोहार' राजवंशों का इतिहास वर्णित है जो कल्हण की व्यक्तिगत जानकारी और तात्कालीन साक्ष्यों पर आधारित है।

स्रोत :

कल्हण ने राजतरंगिणी के लेखन में अपने पूर्वापर एवं समकालीन स्रोतों– चिट्ठियों, शासनादेशों, अभिलेखों, मुद्राओं, प्राचीन स्मारकों तथा राजकीय अभिलेखागारों में सुरक्षित

राजावलियों एवं वंशावलियों का उपयोग किया है।[3] कल्हण ने इन स्रोतों का उल्लेख अपने ग्रंथ के आरंभ के श्लोकों में किया है। उन्होने कुछ स्रोतों की आलोचना भी की है, जैसे– सुब्रत, क्षेमेन्द्र की क्रॉनिकल।[4] डॉ० बाशम ने लिखा है कि कल्हण ने अपने पूर्ववर्ती इतिहासकारों तथा नीलमत पुराण का उपयोग किया है।[5] कल्हण ने तथ्यों के संग्रह और तिथिक्रमों को ही विवरण का आधार नहीं बनाया है, अपितु मंदिरों और मठों में रखे गए संलेखों, अभिलेखों तथा प्रशास्तियों का भी उपयोग किया है।[6] कल्हण ने प्राचीन मुद्राओं को भी अपने लेखन का आधार बनाया तथा मौखिक और लिखित तत्कालीन हिन्दू जीवन में प्रचलित तीन परंपराओं को भी स्वीकार किया है। ललितादित्य की मृत्यु (769 ई0) से संबंधित परंपराओं का उल्लेख किया है।[7] परंतु कल्हण ने अपनी ओर से किसी को भी सही नही माना है, अपितु यह लिखा है कि– जब बड़ो की मृत्यु होती है तो उनके संबंध में अनेक प्रकार की कहानियाँ लोक जीवन में प्रचलित हो जाती है।[8] इसी प्रकार यशस्कर के मृत्यु के संबंध में प्रचलित दो परंपराओं का उल्लेख किया है।[9] परंतु किसी भी परंपरा को कल्हण ने प्रचलन रूप में स्वीकार नही किया है, अपितु उसकी प्रामाणिकता के संबंध में अपना विवेचन भी दिया है। इस तरह कल्हण आधुनिक इतिहास लेखन विधाओं को स्वीकारते हुए दिखलाई देते है।

राजतरंगिणी की विषय–वस्तु :

कल्हण ने प्रारंभ से लेकर अपने समय तक का कश्मीर का बृहद् इतिहास लिखना चाहा था। वस्तुतः राजतरंगिणी किसी एक शासन वंश का इतिहास न होकर कश्मीर का सामान्य इतिहास है। उनका विवण कश्मीर की उत्पति से प्रारंभ होता है, जिसे पुराणों में चर्चित मनु–वैवस्वत की परंपराओं से संबंध किया गया है। परंतु प्रारंभिक इतिहास–लेखन में कल्हण पुराणों से प्रभावित प्रतीत होता है, इसलिए बहुत अधिक विश्वसनीय नही माना जाता है। उनका विवरण विक्रमादित्य द्वितीय, जिसने मातृगुप्त को सिंहासन पर बैठाया के समय से बहुत कुछ विश्वसनीय होता दिखाई पड़ता है। इसके पहले प्रथमतः कुछ पौराणिक शासकों का उल्लेख है, जिसके बाद अशोक तथा कुछ कुषाण शासकों की चर्चा है। इनके तथा मातृगुप्त के बीच कई शासकों के नाम आते है जो प्रायः हूण समझे गए प्रतीत होते है। वस्तुतः कश्मीर का स्वतंत्र इतिहास मातृगुप्त के समय से ही प्रारंभ होता है। इसके पूर्व यह कुषाण साम्राज्य तथा इससे और पहले मौर्य साम्प्रज्य का अंग था। कश्मीरी इतिहासकारों की क्षेत्रीय देश भक्ति ने इन ऐतिहासिक तथ्यों का विवेचन करते हुए अपने शासकों की प्राचीनता को 'भारत युद्ध' तक खोजने को प्रेरित किया। मातृगुप्त तथा उसके उतराधिकारियों के विवरण के पश्चात कश्मीर पर हूण अधिपत्य का उल्लेख है। 'कार्कोट' शासन वंश के प्रथम शासक दुर्लभवर्द्धन (7वीं शताब्दी का प्रारंभ) के साथ हम निश्चित ऐतिहासिक भूमि प्राप्त करते है।[10] वस्तुतः कल्हण का इतिवृत अब वैज्ञानिक इतिहास का रूप धारण करने लगता है। उत्पल' वंश तक आते–आते तो उसकी रचना में अत्यंत ही सूक्ष्मता और शुद्धता एवं तर्क–परखता आ जाती है।

कल्हण का इतिहास–दर्शन :

कल्हण ने कवि को ही इतिहासकार माना है और अपने को भी वैसा ही बतलाया है।[11] इतिहास के विषय में भी उसकी मान्यता थी कि इतिहास अधिक व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करता है, क्योंकि प्राचीन शासन कालों के ऐतिहासिक अध्ययन से भविष्य के राजाओं के भाग्यों तथा दुर्भाग्यों को देखने की अधिक शक्तिशाली दूरदृष्टि प्राप्त होती है।[12]

राजाओं का संक्षिप्त वर्णन किये जाने का कारण बतलाते हुए ए०एल० बाशम लिखते है कि संभवतः उनके पास संबद्ध साक्ष्य कम मात्रा में रहे होगे और दूसरी बात यह रही होगी कि वह विशेषतया नैतिक शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य मुख्य रूप से रखे होंगे। कल्हण ने राजतरंगिणी के लेखन में अपने मातृभूमि कश्मीर के प्रति राष्ट्रीयता की भावना को प्रकट किया है कि इस श्रेष्ठ भूमि को कोई विदेशी विजित नही कर सकता है– वह ऐतिहासिक दृष्टि से राष्ट्रवादी इतिहास–लेखन कहा जाता है।

कल्हण ने अपने इतिहास–लेखन में कही भी पक्षपात नहीं किया है। उनका कथन है कि वही कवि स्तुति के योग्य है जो राग द्वेष से पृथक रहकर केवल तथ्यों के निरूपण के लिए अपनी भाषा का प्रयोग करें।[14] कल्हण ने इन सिद्धांतों का मात्र प्रतिपादन ही नही किया अपितु इसके अनुसार इतिहास–लेखन का कार्य भी किया। उन्होनें घटनाओं को सत्य एवं निरपेक्ष रूप से प्रस्तुत किया है। इसे हम जय सिंह प्रकरण में देख सकते है, जहाँ कल्हण ने उनके उतम गुणों की प्रशंसा के साथ–साथ दुर्गुणों की निंदा भी की है।

कल्हण के ऐतिहासिक दृष्टि को उसके कर्म के सिद्धांत में, विश्वास से जाना जा सकता है। यद्यपि वह अमानवीय शक्तियों को भी स्वीकारता है। उनके अनुसार कर्म, मौलिक–नैतिक समर्थन प्रदान करता है, किन्तु दुष्कर्मो का दण्ड इस या उस जन्म में भुगतना ही होता है।[15]

वह भाग्य को ईश्वर मानते थे।[16] किंतु आत्मिक विश्वास और शक्ति को भी स्वीकारते थे।[17] उनकी दृष्टि में राजा दैवीय पद नही है, अपितु प्रजा का पिता होता है।[18] राजा अपनी प्रजा का ही एक अंग होता है।

वस्तुतः कल्हण ने घटनाओं को कालक्रम से निबद्ध करना तथा उपदेश ग्रहण करने की कला का विशेष प्रचार किया है। राजतरंगिणी में पौराणिक काल से लेकर 12वीं सदी तक का विस्तृत तथा क्रमबद्ध राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास लिखा पाया जाता है। नवम् शताब्दी के पहले का इतिहास बिल्कुल अधूरा एवं धुंधला है। अंतिम शताब्दियों का इतिहास बड़ा ही स्पष्ट, विस्तृत और घटना–बहुल है। कल्हण की ऐतिहासिक कल्पना राजाओं को तिथि तथा युद्ध के समय देने में नही है, बल्कि सांस्कृतिक इतिहास प्रस्तुत करने में है। इसीलिए उन्होनें कवियों की भी स्थान–स्थान पर विस्तृत चर्चा की है।

कल्हण ने इतिहास लेखन को पूर्व परंपराओं से पूर्णतया पृथक् एक तिथिक्रमिक इतिहास प्रस्तुत करने का श्रेष्ठ कार्य किया है। ऐतिहासिक घटनाओं में न्यायाधीश की दृष्टि को स्वीकार कर निरपेक्ष इतिहास लेखन का आदर्श प्रस्तुत किया है। तथ्यों का सग्रह करके उसकी सत्यता का विश्लेषण किया है। प्रत्यक्ष दर्शित घटनाओं में भी निरपेक्षता का पूर्ण निर्वाह किया है। अतः

ऐतिहासिक दृष्टि से राजतरंगिणी एक ऐतिहासिक कृति है और कल्हण एक श्रेष्ठ इतिहासकार के रूप में मान्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. ए०एल०बाशम : 'दि कश्मीर क्रॉनिकल हिस्टोरियंस ऑफ इंडिया', पाकिस्तान एंड सीलोन, पृ०–58
2. ए०के० वार्डर : एन इंट्रोडक्शन ऑफ इंडियन हिस्टोरियोग्राफी, पृ0–57
3. आर०के० मजूमदार हिस्टोरियोग्राफी पृ०–303
4. राजतरंगिणीः 1/12–13
5. वही 1/14
6. वही 1/15
7. वही 4/367–370
8. वही 4/371
9. वही 6/90–112
10. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय इतिहास स्वरूप एवं सिद्धांत, पृ०–80
11. राजतरंगिणी : 1/4–5
12. वहीं, 1/189
13. ए०एल०बाशम : उपरोक्त पृ0–61
14. राजतरंगिणी 1/7
15. वहीं 3/44
16. वही, 1/324, 2/77, 7/7, 372
17. ए०एल० बाशमः उपरोक्त पृ०–64
18. राजतरंगिणी : 5/350